स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - तृतीय खण्ड
(पंचम पत्र - हिन्दी कथा एवं नाट्य साहित्य)

- डॉ॰ मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे॰ के॰ कॉलेज

जयशंकर प्रसाद के नाटकों की विशिष्टता

प्रसाद के नाटकों में वैयक्तिकता, आवेगमयता, जीवन के प्रति अमित उल्लास, साहस आदि रोमैंटिक आंदोलन की विशेषताएँ नजर आती हैं। उनके प्रत्येक पात्र में चारित्रिक विशेषताएँ मौजूद रहती हैं। प्रसाद की कविताओं की अपेक्षा उनके नाटकों में अधिक आवेग है। यह आवेग रचना के समग्र तन्त्र में देखा जा सकता है। पात्रों की क्रिया - प्रतिक्रिया, कथोपकथन, तथा आवेग की निर्बंधता स्कंधगुप्त जैसे पात्र में भी मिलता है।

'चंद्रगुप्त' व्यष्टि और समष्टि की समान्वित चेतना से भरा पड़ा है। उसमें सांस्कृतिक विचारों, देश-प्रेम, स्त्री-पुरुष की प्रणय-लीला में रोमैंटिक आवेग और आदर्श का सार तत्व है।

संवादों पर भी रोमांस का प्रभाव देखा जा सकता है - "भाभी! सर्वात्मा के स्वर में, आत्मसमर्पण के प्रत्येक ताल में, अपने विशिष्ट व्यक्तित्व का विस्मृत हो जाना - एक मनोहर संगीत है! क्षुद्र स्वार्थ, भाभी, जाने दो; भइया को देखो - कैसा उदार, कैसा महान् और कितना पवित्र!" यह देवसेना का कथन है। इसका स्वर रोमैंटिक है। व्यक्तित्व के विसर्जन का अर्थ आत्मप्रसार की कामना। उदारता, महानता और पवित्रता वे मूल्य हैं जिनमें रोमैंटिक कवियों की गहरी आस्था रही है।

प्रसाद के नाटकों की कथावस्तु, चरित्र चित्रण, संवाद, अभिनेयता आदि को समझने के लिए उनकी रोमैंटिक रुझान को समझना आवश्यक है।

वस्तु योजना की दृष्टि से नाटककार को कथानक योजना और गतिशीलता पर विशेष ध्यान देना पड़ता है। नाटक का प्रत्येक दृश्य, प्रत्येक अंक अलग-अलग गतिशील होता है। इसलिए दृश्य-संकलन में प्रसाद ने संग्रह और त्याग का विशेष ख्याल रखा है। भाग्य-विडम्बना, आश्चर्य-तत्व, मोड़ बिन्दु का उपयोग प्रसाद ने बड़ी चतुरता और वैचारिकता से की है।

Scanned with CamScanner